सुबह का स्वर्गीय मन्ना (1 सितम्बर)

प्रेरितों 9:15 परन्तु प्रभु ने उस से कहा, "तू चला जा; क्योंकि वह तो अन्यजातियों और राजाओं, और इस्त्राएलियों के सामने मेरा नाम प्रगट करने के लिये मेरा चुना हुआ पात्र है”।

यह इसलिए है क्योंकि हम यीशु को पिता की पसंद के रूप में देखते हैं, और इसलिए हम खुद को पिता के लिये एकजुट करते हैं; क्योंकि हम देखते हैं कि पिता का चरित्र प्रभु यीशु में प्रकट होता है, जिसके कारण हम अपना सब कुछ छोड़ कर उनके पीछे चलते हैं। इसी तरह, अगर हम अपनी सहायता और किसी भी मनुष्य को दिव्य योजना और सेवा के संबंध में अपना समर्थन देते हैं, तो उसे बस इस आधार पर होना चाहिए कि उसका चुनाव प्रभु ने किया है - न कि केवल एक व्यक्तिगत चुंबकत्व या पक्षपात के आधार पर, बल्कि इसलिए कि हमारे मन को प्रभु ने छुआ है, इस अहसास के साथ की उसकी अगुआई करने वाले की भी नियुक्ति प्रभु की ओर से है। Z.'03-206 R3218:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (2 सितम्बर)

1 पतरस 1:22 अतः जब कि तुम ने भाईचारे की निष्कपट प्रीति के निमित्त सत्य के मानने से अपने मनों को पवित्र किया है, तो तन मन लगा कर एक दूसरे से अधिक प्रेम रखो।

ज्ञान का कलीसिया में बहुत सम्मान होना चाहिए, और इसे प्रगति का, विकास का प्रमाण माना जाना चाहिए, क्योंकि कोई भी प्रभु में और उनकी शक्ति में - अनुग्रह में - मजबूत नहीं हो सकता है, जब तक कि वह ज्ञान में भी नहीं बढ़ता है। हम उन लोगों का अत्यधिक सम्मान करते हैं, जिनका प्रभु के प्रति और उनके सत्य के प्रति प्रेम, उनके वचन के अध्ययन में उत्साह के द्वारा साबित होता है, और जिनके प्रति परमेश्वर का समर्थन, उनका पवित्रशास्त्र की गूढ़ और गहरी बातों में मार्गदर्शन के द्वारा जाना जाता है। फिर भी, जैसा कि सांसारिक परिवार में हम शिशुओं और अपरिपक्व लोगों को प्यार करते हैं और उनकी देखभाल करते हैं, उसी प्रकार विश्वास के घराने में भी हमें छोटे बच्चों की देखभाल करनी है और उनसे प्रेम करना है और उनकी मदद करनी है ताकि वे प्रभु में और उनकी सामर्थ्य में मजबूत बन सकें। Z.'03-207 R3219:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (3 सितम्बर)

होशे 6:6 क्योंकि मैं बलिदान से नहीं, स्थिर प्रेम ही से प्रसन्न होता हूं, और होमबलियों से अधिक यह चाहता हूं कि लोग परमेश्वर का ज्ञान रखें।

वह जो अपनी इच्छा, अपना हृदय प्रभु को दे देता है, वह सब कुछ दे देता है; वह जो अपनी इच्छा नहीं देता, जो हृदय से प्रभु की आज्ञा नहीं

मानता, वह प्रभु को स्वीकार योग्य बलिदान नहीं दे सकता। "सुन मानना (यहोवा का आज्ञापालन करना) तो बलि चढ़ाने से उत्तम है", एक ऐसा सबक है, जिसे मसीह यीशु में अलग किये गए सभी के दिलों पर गहराई से अंकित हो जाना चाहिए। आज्ञापालन की आत्मा का होना भी आवश्यक है, और जो आज्ञापालन की आत्मा रखता है, वह न केवल दिव्य इच्छा का पालन करेगा, बल्कि उस दिव्य इच्छा को अधिक से अधिक जानना चाहेगा ताकि वह उसका पालन कर सके। इसी समूह के लोगों के लिये पवित्रशास्त्र यह बताता है कि, "जब तेरे वचन मेरे पास पहुंचे, तब मैं ने उन्हें मानो खा लिया;" और फिर से, हमारे प्रभु यीशु के शब्दों में, "हे मेरे परमेश्वर मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं; और तेरी व्यवस्था मेरे अन्त:करण में बनी है।" Z.'03-220 R3225:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (4 सितम्बर)

1 यूहन्ना 4:18 प्रेम में भय नहीं होता, वरन सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है; क्योंकि भय का सम्बन्ध दण्ड से होता है।

वास्तव में भय का प्रभाव, प्रबल, प्रभाव डालने वाला और डराने वाला है, केवल उनको छोड़कर, जिन्होनें परमेश्वर पर पिछले अनुभवों के द्वारा उनको जानना सिख लिया है, उनपर भरोसा करना सीख लिया है, तब भी

जब वे परमेश्वर की उपस्थिति का चिन्ह नहीं देख पाते हैं। दानव जैसे भय और निराशा का सामना पत्थर की गोली से करना है (जो की परमेश्वर का वचन है), "ये लिखा है"। विश्वास की गुलेल के द्वारा, परमेश्वर के वादों का दावा इतने इतने प्रभावित तरीके से करना है, की यह शैतान को मार गिराए और हमको उसकी प्रधानता से छुटकारा दिलाए...इस तरह से परमेश्वर के वचन के सहारे के द्वारा, और उनके सोटे (वचन) और लाठी (पवित्र आत्मा) के द्वारा हम सही तरीके से साहसी हो सकते हैं और संप्रदायवाद का जवाब उसी तरीके से दे सकते हैं, जैसा दाऊद ने पलिश्ती को 1 शमूएल 17:45 वचन में दिया, "दाऊद ने पलिश्ती से कहा, तू तो तलवार और भाला और सांग लिए हुए मेरे पास आता है; परन्तु मैं सेनाओं के यहोवा के नाम से तेरे पास आता हूं, जो इस्राएली सेना का परमेश्वर है, और उसी को तू ने ललकारा है”। Z.'03-329 R3231:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (5 सितम्बर)

श्रेष्ठगीत 8:6 ईर्ष्या कब्र के समान निर्दयी है: उसकी ज्वाला अग्नि की दमक है वरन परमेश्वर ही की ज्वाला है।

ईर्ष्या एक मसीही का सबसे बड़ा शत्रु है। एक मसीही को ईर्ष्या के चरित्र को मार डालना जरुरी है क्योंकि ईर्ष्या का चरित्र परमेश्वर और मनुष्य की

नज़र में उनका बहुत बड़ा दुश्मन है और हर एक अच्छे सिद्धान्त का भी शत्रु है। और इस हद तक की ईर्ष्या का चरित्र होना एक मसीही के हृदय को क्षण भर के लिए भी अपवित्र कर देता है, पवित्रता और प्रेम की आत्मा के द्वारा ही इसको साफ़ किया जा सकता है। ईर्ष्या खुद में एक भयानक राक्षस नहीं है, पर इसके जहर रूपी वार एकदम निश्चय है कि, दूसरों को दर्द देते हैं और उनको मुश्किल में डालते हैं। और इसके साथ ही साधारण रूप से शाप लाता है, और अन्त में उनका भी नाश कर देता है, जिनके अन्दर ईर्ष्या का ये गुण है। ईर्ष्या सोच में ही पाप है, सोच में ही क्रूरता है और ये गुण बहुत सही है की तेजी से क्रिया में पाप और क्रूरता की ओर बढ़ाता है। यदि मन इस ईर्ष्या के ज़हर से जहरीला हो जाता है, तो इसे बहुत मुश्किल से पूरी तरह से साफ़ किया जा सकता है, और यह ईर्ष्या का गुण चरित्र में होने से, यह गुण बहुत तेजी से अपने वातावरण में जो भी होता है उसको अपने चरित्र और रंग में डाल देता है। Z.'03-330 R3231:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (6 सितम्बर)

भजन संहिता 91:10 कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी।

कुछ भी किसी भी माध्यम से हमारी कोई भी हानि नहीं पहुँचा सकता। चीज़ें बाधा डाल सकती हैं हमारे शारीरिक हितों या आराम या जीवन के मामलों के साथ; पर जब हम ये याद करते हैं की हम शरीर में नहीं हैं पर आत्मा में हैं, की हम नई सृष्टि हैं और हमसे प्रभु ने वादा किया है की वे हमें उनके उचित समय में, उनके राज्य का प्रभु यीशु के साथ वारिस बनाएंगे, हम ये महसूस कर सकते हैं की कोई भी बाहरी प्रभाव हमारे सच्चे हित में, हमारे आत्मिक हित में बाधा नहीं डाल सकता, और न ही हमें परमेश्वर के राज्य की महिमा पाने में कोई भी अड़चन डाल सकता है, जिसका वादा परमेश्वर ने उनसे किया है जो विश्वासी हैं। सिर्फ प्रभु में हमारे भरोसे और विश्वास की कमी ही हमें उनके प्रेम और उनके वादों से अलग कर सकती है। Z.'03-331 R3232:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (7 सितम्बर)

2 कुरिन्थियों 5:17 इसलिए यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्टि है: पुरानी बातें बीत गई हैं; देखो, सब बातें नई हो गई हैं।

मसीह यीशु में नई सृष्टि एक दूसरे को शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार जानते हैं। एक दूसरे की आत्माओं या नए मनों में श्रेष्ठ भावनाएं होती हैं, सबसे ऊँची आकांक्षाएं होती हैं, जो कि अच्छी, सच्ची, श्रेष्ठ और शुद्ध होती हैं - फिर चाहे शरीर के अनुसार उनकी कुछ भी कमजोरियां हो सकती हैं। वे इरादे, इच्छा और परमेश्वर के साथ तालमेल के नए दृष्टिकोण से एक दूसरे से प्रेम करते हैं, और जैसे-जैसे वे एक दूसरे की ऊर्जा को संसार, शरीर और विरोधी शैतान के बुरे प्रभावों के विरुद्ध अच्छी कुश्ती लड़ने में लगाते हुए देखते हैं, एक दूसरे के लिए उनकी मित्रता अधिक से अधिक बढ़ती जाती है। न तो जीभ और न ही कलम इस प्रेम, मित्रता को ठीक से व्यक्त कर सकती है, जो मसीह यीशु में इन नई सृष्टियों के बीच में बसती है, जिनके लिये पुरानी बातें बीत गई हैं; और सब बातें नई हो गई हैं। Z.'03-333 R3233:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (8 सितम्बर)

याकूब 4:4 क्या तुम नहीं जानतीं, कि संसार से मित्रता करनी परमेश्वर से बैर करना है? अतः जो कोई संसार का मित्र होना चाहता है, वह अपने आप को परमेश्वर का बैरी बनाता है।

परमेश्वर ने जानबूझकर मामले को ऐसी स्थिति में रखा है कि उनके लोगों को अपनी पसंद को चुन लेना चाहिए, और या तो दिव्य मित्रता और संगती, या सांसारिक मित्रता और संगती को खो देना चाहिए; क्योंकि जिन चीज़ों से प्रभु प्रेम करते हैं, वे सांसारिक लोगों के लिये अरुचिकर है, और जिन चीज़ों से सांसारिक लोग प्रेम करते हैं, बुरे विचार, निंदा करना, यह सब प्रभु की दृष्टि में घृणित है, और जो लोग इन बुराईयों से प्रेम करते हैं और उनका अभ्यास करते हैं, वे परमेश्वर और प्रभु की संगती को खो देते हैं - वे परमेश्वर और प्रभु की आत्मा के नहीं रहते। "यदि किसी में मसीह का आत्मा नहीं तो वह उसका जन नहीं।" Z.'99-70 R2444:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (9 सितम्बर)

फिलिप्पियों 2:15,16 ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो।

परमेश्वर के हर एक बच्चे का यह कर्तव्य है की सच्चाई का प्रचार करने में और दूसरों तक पहुंचाने के लिए, उसे बहुत क्रियाशील रहना है -- ताकि

हमारी रोशनी का उजियाला दूसरों के सामने चमक सके और हमें अपने दिए की बत्ती को छांटते रहना है और जलते रहने देना है। "दिए की बत्ती को छांटते और जलते रहने देना" का क्या मतलब है? इसका मतलब यह है कि, हमें जीवन के वचनों को बहुत करीब से ध्यानपूर्वक पढ़ना है, ताकि सच्चाई के ठीक ज्ञान को पा सकें, और बहुत ध्यानपूर्वक और विश्वासी होकर हर एक गलती को जैसे ही देखें, उसे काट कर दूर कर सकें -- चाहे यह गलती हमारे उपदेश में हो, या गलत चालचलन में हो, या गलत बातें हो -- ताकि हमारे साफ़ और पारदर्शी चरित्र में से दिव्य सच्चाई की शुद्ध रोशनी का उजियाला बिना किसी रुकावट के चमक सके। Z.'03-358 R3243:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (10 सितम्बर)

इफिसियों 4:29 कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही निकले जो उन्नति के लिये उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो।

हमारा भ्रष्ट स्वभाव हमारे विवेक के पीछे खुद को छुपाकर ये ऐलान करता है की सत्य कहना हमेशा उचित है, इसीलिये वह यह भी सोचता है कि, परमेश्वर के कहने का मतलब यह नहीं रहा होगा की सत्य कहना कभी

निंदा करना भी हो सकता है, बल्कि वह यह सोचता है की, शरीर और शैतान के कार्यों के रूप में बुरा बोलने और निंदा करने को परमेश्वर के द्वारा दोषी ठहराने का सम्बन्ध जरूर झूठ और असत्य बोलने से रहा होगा। ऐसा सोचना एक बड़ी भूल है: निन्दा करना निन्दा ही है, चाहे वह सत्य के लिये की जाए या झूठ के लिये की जाए। और परमेश्वर और सभ्य समाज दोनों के कानून में, निन्दा करना गलत है। निंदा एक ऐसी चीज है जो दूसरों को चोट पहुँचाने के इरादे से की जाती है, चाहे वह सत्य के लिये हो या झूठ के लिये हो, और इस मामले में मनुष्यों का कानून परमेश्वर के कानून से सहमति रखता है कि, दूसरों को ऐसी चोट पहुँचाना गलत है। Z.'99-70 R2444:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (11 सितम्बर)

लूका 14:27 जो कोई अपना क्रूस न उठाए, और मेरे पीछे न आए, वह भी मेरा चेला नहीं हो सकता।

प्रभु यीशु के मुताबिक क्रूस उठाने का मतलब है विपरीत परिस्थितयों में भी परमेश्वर पिता की इच्छा करना। इस मार्ग में चलने पर प्रभु यीशु को उन लोगों की ईर्ष्या, नफ़रत, डाह, विरोध, ताड़नाओं का सामना करना पड़ा, जो खुद को परमेश्वर के लोग बताते थे। पर जिनको हमारे प्रभु ने

कहा था कि उनका पिता शैतान है क्योंकि वे उनका ह्रदय पढ़ पाते थे ...क्योंकि हम उसी "सकेत मार्ग" में चल रहे हैं, जिसपर हमारे स्वामी चले थे, तो हम ये उम्मीद कर सकते हैं की हमारे क्रूस यानि तकलीफें भी प्रभु यीशु के जैसी होंगी -- हमें भी विरोध आएंगे जब हम अपने स्वर्गीय पिता की इच्छा करना चाहेंगे -- हमें भी विरोध आएंगे जब हम अपने स्वर्गीय पिता के कारणों के लिए उनकी सेवा करेंगे और अपनी रोशनी को चमकने देंगे जैसा हमारे गुरु और मार्ग दर्शक ने किया था। Z.'03-345 R3237:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (12 सितम्बर)

लूका 21:19 अपने धीरज से तुम अपने प्राणों को बचाए रखोगे।

प्रेरित याकूब 1:4 वचन में बताते हैं -- "पर धीरज को अपना पूरा काम करने दो कि तुम पूरे और सिद्ध हो जाओ, और तुम में किसी बात की घटी न रहे"। ये बहुत स्पष्ट है, की धीरज, इसलिए चरित्र के दूसरे अनुग्रहों को भी शामिल करता है -- इसका मतलब यही है, दूसरे चरित्र भी कुछ हद तक आप में हों। प्रभु के लोगों में विश्वास से पहले धीरज का होना अनिवार्य है, और साधारणतया धीरज का स्तर यह बताता है कि आप में विश्वास की कितनी मात्रा है। जो मसीही अपने आप को धीरज में कम

पाता है और व्याकुल हो जाता है, उसके लिए ये स्पष्ट है की प्रभु के प्रति उसका विश्वास भी कम है; नहीं तो वो मसीही परमेश्वर के अनुग्रह से भरे वादों पर आराम कर सकता था और उसके पूरे होने के लिए इन्तज़ार कर सकता है। उचित परिश्रम और ऊर्जा का उपयोग करने के बाद उसे प्रभु के साथ परिणाम और समय और ऋतुओं को छोड़कर संतुष्ट होना चाहिए। Z.'03-361 R3245:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (13 सितम्बर)

भजन संहिता 133:1 देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिले रहें!

हमारे प्रभु यीशु की तरह हमें मेल करानेवाला बनना है और सभी भाईयों के साथ आत्मा की एकता और शान्ति के बन्धनों में एक साथ रहना है। हमारी क्रियाओं और संघर्ष करने की क्षमता को (लड़ाकूपन) हमें अपने सबसे बड़े शत्रु शैतान, पाप और अपने खुद के गिरे हुए शरीर के विरुद्ध उपयोग में लाना है। और इस प्रकार से हम और सभी भाई लोग ये पाएंगे की हमारे स्वभाव में काफी लड़ाकूपन का तत्त्व है, जिसके द्वारा हम हर उस परिस्थिति से लड़ सकते हैं जो हमारे तीन शत्रु हमें देते हैं, और इस प्रकार से हम ये पाएंगे कि हम जो कर रहे हैं, वो प्रभु को भाता है, और

हम अपने हर एक गुण को (प्रेम और सहायता वाले गुण को) जो हमारे पास है, उसको एक दूसरे को बढ़ाने में उपयोग करेंगे और जैसा हमको अवसर मिले, सभी मनुष्यों की भलाई करेंगे, खासकर सच्चाई के घराने के लोगों की भलाई करेंगे। Z.'03-363 R3246:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (14 सितम्बर)

1 पतरस 2:12,19 अन्यजातियों में तुम्हारा चालचलन भला हो; इसलिये कि जिन जिन बातों में वे तुम्हें कुकर्मी जान कर बदनाम करते हैं, वे तुम्हारे भले कामों को देख कर; उन्हीं के कारण कृपा दृष्टि के दिन परमेश्वर की महिमा करें। क्योंकि यदि कोई परमेश्वर का विचार करके अन्याय से दुख उठाता हुआ क्लेश सहता है, तो यह सुहावना है।

हो सकता है कि हमारी बदनामी और निन्दा की जाये, लेकिन वे सभी जो हमें जानते हैं, जिनके साथ हमारा बात व्यवहार है, उनको अपने अनुभव में सिद्धांत के प्रति हमारी वफ़ादारी को देखना चाहिए। हमारे मुंह के वचन और हमारे हृदय का ध्यान और जीवन का आचरण प्रभु के सम्मुख ग्रहण योग्य हो और उनके नाम और उनके कारणों के निमित्त आदर दे, इसके लिये किये गए हमारे प्रयासों को उन्हें देख पाना चाहिए। ताकि मसीह के

द्वारा परमेश्वर की महिमा हो, जिनकी महिमा युगानुयुग होती रहे और राज्य युगानुयुग बना रहे। Z.'03-365 R3248:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (15 सितम्बर)

2 कुरिन्थियों 6:17 इसलिये प्रभु कहता है, उनके बीच में से निकलो और अलग रहो; और अशुद्ध वस्तु को मत छूओ, तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा।

जो लोग लगातार आत्मिक मामलों में दुनिया से अलग रहते हैं, और केवल उन्हीं को सच्चाई के भाई समझते हैं, जिन्होंने हृदय का खतना कर लिया है, और जिन्हें परमेश्वर ने अपने परिवार में गोद ले लिया है, वैसे लोगों का विरोध, झूठी निन्दा, आदि दुनिया के विद्वानों, समाजवादियों, निन्दकों आदि के द्वारा होती है, क्योंकि अन्धकार के लोग रोशनी से नफ़रत करते हैं, सत्य के उपदेशों से नफ़रत करते हैं। फिर भी हमारे लिए सत्य का मार्ग ही सर्वोत्तम और सुरक्षित मार्ग है और हमें इसी मार्ग पर चलना चाहिए। सच्चे इसराएली न केवल हमारे भाई हैं बल्कि जितना सम्भव हो सके उन्हीं को हमें सच्चे भाईयों के रूप में पहचानना है, और इस तरह से वे सच्चे गेहूँ हैं जिन्हें जंगली गेहुओं से अलग किया गया है। Z.'99-203 R2512:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (16 सितम्बर)

भजन संहिता 29:11 यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा; यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशीष देगा।

यदि हमारे पास क्लेश और लालसाएँ हैं, जिन पर हम विजय पा सके हैं, और जो हमारे चरित्र में धीरज का कार्य कर रहा है, अनुभव का कार्य कर रहा है, भाइयों के प्रति भलाई, सहानुभूति और प्रेम का कार्य कर रहा है, तब हमें आनंदित होना चाहिए और धन्यवाद के साथ प्रार्थना करनी चाहिए और दिव्य करुणा और सहायता के प्रति आभार प्रगट करना चाहिए। यदि आपको क्लेश आपके सहने से अधिक भारी लग रहे हैं, और ऐसा लगता है की वे आपको कुचल देंगे, तो इस मामले को हमारे महान बोझ उठानेवाले प्रभु यीशु के पास लेकर जाएँ, और उस भार को उठाने में जिसमें आपका भला हो उनकी मदद माँगे, और उनसे विनती करें की जो क्लेश आपका भला न करके आपको चोट पहुँचा सकता है उससे प्रभु आपको छुटकारा दिला दें। Z.'96 -163 R2006:2 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (17 सितम्बर)

कुलुस्सियों 1:27 मसीह जो महिमा की आशा है तुम में रहता है।

परमेश्वर के हर एक सच्चे बच्चे के अंदर निश्चय एक निजी मसीही चरित्र होना चाहिए जो की किसी अन्य मसीही के आत्मिक जीवन के ऊपर उसके अस्तित्व के लिए निर्भर नहीं होना चाहिए। उसे दूसरे मसीहियों के द्वारा सत्य के वचन के ऐलान और उदाहरण देकर समझाने के द्वारा जीवन के उन सिद्धान्तों से प्रेरित होना चाहिए, जो उसे एक स्थापित चरित्र देता है, निजी आत्मिक व्यक्तितत्व देता है। हर एक मसीही का आत्मिक व्यक्तितत्व इतना सकारत्मक और स्थिर होना चाहिए कि यदि जिस प्रिय भाई या बहन के आत्मिक जीवन ने पहले हमारे जीवन को पोषण दिया था और हमारे चरित्र को आगे बढ़ाया था, वे भी गिर जाएँ (जो कि प्रेरित बताते हैं की असंभव नहीं है - इब्रानियों 6:4-6; गलातियों 1:8), तब भी हम जीते रहेंगे, और अपने आपको सत्य की आत्मा के अनुसार चलाने में सक्षम होंगे। Z.'03-375 R3250:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (18 सितम्बर)

निर्गमन 33:14 यहोवा ने कहा, मैं आप चलूंगा और तुझे विश्राम दूंगा।

प्रभु अपने लोगों के साथ सदा उपस्थित रहते हैं। वह हमेशा हमारे बारे में सोचते रहते हैं, हमारे हितों की खोज में रहते हैं, हमें खतरों से बचाते हैं, हमारी सभी सांसारिक और आत्मिक जरूरतों को पूरा करते हैं, हमारे मनों को पढ़ते हैं, उनके प्रति प्रेमपूर्ण भक्ति के हर आवेग को चिन्हित करते हैं, हमारे अनुशासन और शुद्धिकरण के लिए वे हमारे चारों ओर के प्रभाव को आकार देते हैं और सहायता या सहानुभूति या उनके साथ संगती के लिए हमारी हल्की सी पुकार को भी ध्यान से सुनते हैं। वह कभी भी एक पल के लिए भी न ऊँघते हैं और न सोते हैं, चाहे हम उन्हें व्यस्त दुपहरी में पुकारें या रात की सुनसान घड़ियों में। परमेश्वर की इस तरह की सदा बने रहने वाली विश्वसनीयता कितनी आशीषित है! और परमेश्वर का कोई भी असली बच्चा अपने गोद लिये जाने के इस सबूत से वंचित नहीं है। Z.'03-376 R3251:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (19 सितम्बर)

यूहन्ना 17:17 सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है।

हमारे प्रभु हमारे आत्मिक जीवन में बढ़ोतरी और उन्नति को हमारे सत्य को ग्रहण करने से और इस सत्य के प्रति आज्ञाकारी होने से जोड़ते हैं, और परमेश्वर के हर एक बच्चे को उस शिक्षा से सावधान रहना है जो ये

दावा करता है की, वह शिक्षा वचन से बढ़कर है, और उसके उस शिक्षा से भी सावधान रहना है, जो यह बताता है कि, मसीह और पवित्र आत्मा उनसे जो अपने आप को बढ़े हुए मसीह बताते हैं वचनों के बगैर बात करते हैं। ऐसा ख्याल उनमें आत्मिक घमण्ड और बखान करने की आत्मा को बढ़ाता है, और वह परमेश्वर का बच्चा परमेश्वर के वचन प्रति सतर्कता नहीं करता और आपत्ति जताता है और उस वचन को शक्तहीन मानता है क्योंकि जो धोखा खाए हुए हैं वे खुद को ज्यादा बड़ा शिक्षक समझते हैं। और शैतान उनके इसी धोखे का फायदा उठाता है और उनको अपनी इच्छा के मुताबिक अपना शिकार बनाता है। Z.'03-377 R3251:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (20 सितम्बर)

यशायाह 57:15 क्योंकि जो महान और उत्तम और सदैव स्थिर रहता, और जिसका नाम पवित्र है, वह यों कहता है, "मैं ऊंचे पर और पवित्र स्थान में निवास करता हूं, और उसके संग भी रहता हूं, जो खेदित और नम्र हैं, कि नम्र लोगों के हृदय और खेदित लोगों के मन को हर्षित करूं।

आइए हम ये याद रखें कि, प्रभु खेदित और दुःखी मन वालों को कभी नहीं त्यागते, वे उन्हें कभी भी अस्वीकार नहीं करते हैं। इसलिए, नई सृष्टि में जो भी प्रभु के लोग हैं, वे चाहे किसी भी मुश्किल में पड़ें और ठोकर

खाएं, यदि वे प्रभु की संगति और क्षमा पाने के लिए भूखे हैं, यदि वे ह्रदय से खेदित और टूटे हैं, तो उनको निराश होने की जरुरत नहीं है, पर उनको ये याद रखना है कि, परमेश्वर ने प्रभु यीशु के मूल्य के द्वारा यह प्रबंध किया है की जो कोई भी परमेश्वर के पास प्रभु यीशु के द्वारा जायेगा, प्रभु यीशु के लहू पर विश्वास के द्वारा जायेगा, परमेश्वर उसे स्वीकार करेंगे और सेत-मेंत उसे उसके सभी पापों से माफ़ करके धर्मी ठहरायेंगे, क्योंकि केवल प्रभु यीशु के बलिदान का मूल्य ही परमेश्वर को हमें हमारे पापों से क्षमा करके धर्मी ठहराने में सक्षम बनाता है। जिनके ह्रदय उनके पापों के कारण टूटे और खेदित हैं, उनको ये जानना चाहिए की उन्होंने "ऐसा पाप नहीं किया है जिसका फल मृत्यु हो", क्योंकि उनके ह्रदय की अवस्था ये साबित करती है, जैसा की प्रेरित इब्रानियों 6:6 वचन में ये एलान करते हैं: जिन्होंने ऐसा पाप किया है, जिसका फल मृत्यु है, "तो उन्हें मन फिराव के लिये फिर नया बनाना अन्होना है"। Z.'03-383 R3255:4 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (21 सितम्बर)

भजन संहिता 23:4 चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा।

छोटे झुंड की भेड़ें प्रभु के उनके पक्ष में होने के कारण किसी भी हानि से नहीं डरेंगी, क्योंकि प्रभु उनके साथ हैं, उनकी ओर हैं, और उन्होंने अपना अनुग्रह छुटकारे के दाम को पहले से ही देकर दिखाया है। वह उनके साथ अपने वचन के द्वारा दिये गए वादों में भी हैं - उनका आश्वासन है कि मृत्यु का अर्थ जीवन का विलुप्त होना नहीं होगा, बल्कि केवल पुनरुत्थान तक, यीशु में बाधारहित नींद में सोना है। क्या आश्चर्य है कि ये मृत्यु की तराइयों में गीत गाते हुए और प्रभु के प्रति अपने ह्रदय में मधुरता रखते हुए चल सकते हैं, अपने पुरे मन और ह्रदय से प्रभु के महान और पवित्र नाम की जयजयकार और स्तुति और प्रशंशा करते हैं, जिन्होनें हमें प्रेम किया और अपने बहुमूल्य लहू से ख़रीदा है, और हमारे प्रिय उद्धारकर्ता के साथ संगी वारिस बनने के लिये बुलाया है। Z.'03-413 R3269:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (22 सितम्बर)

भजन संहिता 23:6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी; और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।

जिस भलाई और करुणा का हम पर्दे के पार अनुमान लगाते हैं, उसकी शुरुआत यहां पहले से ही हो गई है और इसलिये इसकी सराहना की जानी

चाहिए। जो कोई भी वर्तमान समय में प्रभु के आनंद के बारे में कुछ नहीं जानता है, वह जाहिर तौर पर राज्य में प्रभु के आनंद के लिए तैयार नहीं होगा, फिर चाहे उसे जो भी आशीषें और खुशियाँ उस हजार वर्ष के युग के दौरान राज्य के प्रशासन में प्राप्त हो। प्रभु के विश्वासी लोगों को आनंद और हर्ष मिलता है, जिसे पाना एक क्षणिक मामला नहीं है, जो कि उनके प्रभु के द्वारा पहले - पहल स्वीकारे जाने और प्रभु के प्रति उनके अपने समर्पण से जुड़ा हो। प्रभु की भलाई और करुणा को दूर के अतीत की चीज के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि वर्तमान की चीज के रूप में पहचाना और सराहा जाना चाहिए। दिन-प्रतिदिन परमेश्वर की भलाई और करुणा हमारे पीछे आती है, हमें तरोताजा करती है, हमें मजबूत करती है, हमें आशीष देती है। Z.'03-413 R3270:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (23 सितम्बर)

यहूदा 1:3 मैंने तुम्हें यह समझाना आवश्यक जाना कि उस विश्वास के लिये पूरा यत्न करो जो पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया था।

हमारी विश्वास की अच्छाई लड़ाई में बहुत हद तक यह शामिल है की परमेश्वर के वचन की हम कितनी रक्षा करते हैं, और इसमें ये भी शामिल है कि, हम परमेश्वर के चरित्र की कितनी रक्षा करते हैं। ऐसा करने का

मतलब है सच्चाई के लिये किसी भी कीमत पर और किसी भी संख्या में हमलावरों के विरुद्ध खड़े रहने की इच्छा - मनुष्यों के सिद्धान्तों के विरुद्ध खड़ा रहना जो की आनन्द के अच्छे सुसमाचार को, जो की परमेश्वर की कृपा से सब लोगों के लिये होगा, जिसका ऐलान प्रभु ने और प्रेरितों ने किया है, गलत तरीके से प्रस्तुत करते हैं। जैसा की प्रेरित फिर से कहते हैं, "मैं सच्चाई की रक्षा के लिए खड़ा हूँ"। हमलोग सच्चाई की रक्षा करने से कम कुछ भी नहीं कर सकते हैं। यह सत्य परमेश्वर का प्रतिनिधित्व करता है, मसीह का प्रतिनिधित्व करता है, और इस कारण से सत्य हमारा स्तर है और सच्चे योद्धा होने के नाते प्राण देने तक हमें अपने इस स्तर यानि सत्य की रक्षा करनी चाहिए। Z.'03-423 R3274:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (24 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 9:27 परन्तु मैं अपनी देह को मारता कूटता और वश में लाता हूं, ऐसा न हो कि औरों को प्रचार करके मैं आप ही किसी रीति से निकम्मा ठहरूं।

इस देह का, इस शरीर का झुकाव होता है कि, वो अपनी माने जाने वाली मरी हुई अवस्था से जाग जाता है, और इसलिए नए स्वभाव को लगातार

सतर्क रहना है ताकि वह इस शरीर को उठने न दे, ताकि विश्वास की अच्छी लड़ाई लड़ सके और जयवन्त से बढ़कर का इनाम पा सके। नए मन का जो युद्ध है पुराने शरीर के साथ, यह एक अच्छी लड़ाई इस नज़रिए से की, यह लड़ाई पुराने शरीर के पाप और कमजोरियों के साथ है जो कि गिरे हुए स्वभाव से सम्बंधित है। यह विश्वास की लड़ाई इस नज़रिए से है की, नई सृष्टि का पूरा मार्ग ही विश्वास का मार्ग है, जैसा की प्रेरित 2 कुरिन्थियों 5:7 वचन में कहते हैं, “क्योंकि हम रूप को देखकर नहीं, पर विश्वास से चलते हैं” … यह विश्वास की लड़ाई इस नज़रिए से है की कोई भी इस लड़ाई में बना नहीं रह सकता है, जो की इस शरीर और उसकी अभिलाषाओं के साथ है, बजाए इसके की वो परमेश्वर के बहुमूल्य वादों और प्रभु पर जो उसकी सहायता करते हैं, उन पर विश्वास करे। Z.'03-425 R3275:3 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (25 सितम्बर)

1 कुरिन्थियों 1:30 जो परमेश्वर की ओर से हमारे लिये ज्ञान ठहरा अर्थात धर्म, और पवित्रता, और छुटकारा।

वह जिन्होनें हमें छुटकारा दिलाया या अपने खुद के जीवन को बलिदान करके हमें ख़रीदा है, वे हमारे भविष्यद्वक्ता या शिक्षक के रूप में हमें

अपने सुसमाचार के द्वारा यह ज्ञान देते हैं की हम अपनी गिरी हुई अवस्था को देख सकें और खुद प्रभु को हमारे सहायक के रूप में देख सकें; हमारे महायाजक के रूप में वे पहले हमें धर्मी ठहराते हैं और उसके बाद अपनी याजकाई के अंतर्गत हमें पवित्र या अलग करते हैं या हमारा समर्पण कराते हैं; और अंततः, राजा के रूप में, वे विश्वासियों को पूरी तरह से पाप और मृत्यु के प्रभुत्व से छुटकारा दिलायेंगे, और दिव्य स्वभाव की महिमा, आदर और अमरता में ले जायेंगे; - क्योंकि "परमेश्वर हमें भी, यीशु के द्वारा (मरे हुओं में से) जिलायेगा।" "हल्लिलूयाह! क्या रक्षक है!" सचमुच वह सक्षम है और प्रभु यीशु के द्वारा परमेश्वर के पास आने वाले सभी को बचाने के लिए तैयार है। Z.'03-440 R3281:6 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (26 सितम्बर)

इफिसियों 2:20-22 और प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु आप ही है, बनाए गए हो। जिस में सारी रचना एक साथ मिलकर प्रभु में एक पवित्र मन्दिर बनती जाती है। जिस में तुम भी आत्मा के द्वारा परमेश्वर का निवास स्थान होने के लिये एक साथ बनाए जाते हो।

आइए, जैसे-जैसे दिन चढ़ते हैं, इस मंदिर से हमारे तीन गुना संबंध याद रखें:(1) हम अभी भी जीवित पत्थरों के रूप में तैयारी की प्रक्रिया में हैं। (2) सन्दूक लेकर जाने वाले शाही याजकों के सदस्यों के रूप में हम तम्बू से मंदिर की स्थिति में पहुंच रहे हैं; हमारी संख्या में कुछ पहले ही प्रवेश कर चुके हैं और कुछ अभी भी रास्ते में हैं। (3) प्रभु के लोगों के रूप में हमें यह जानने का समय आ गया है कि, आत्मा और समझ के साथ, दिव्य दया, न्याय, प्रेम और सच्चाई के नए गीत को गाने के लिए। आइए हम इनमें से हरेक मामले में विश्वासी रहें, हमारे हिस्सों को पूरा करें, और शीघ्र ही दौड़ पूरी होगी और प्रभु की महिमा मंदिर में भर जाएगी। Z.'03-443 R3284:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (27 सितम्बर)

मत्ती 4:7 तू प्रभु अपने परमेश्वर की परीक्षा न कर।

लालसाएँ लगातार प्रभु के लोगों पर आक्रमण करती हैं - प्रभु के नाम पर कुछ अद्भुत काम करने का सुझाव देती हैं, और इस तरह से खुद के और दूसरों के सामने यह साबित करना चाहती है कि वे स्वर्ग के पसंदीदा हैं। हमें सीखने का सबक यह है कि पिता ने जो काम हमें करने के लिए दिया है, वह दुनिया को समझाने या उनके सामने यह दिखाने का नहीं है

कि हमपर परमेश्वर का खास अनुग्रह है और हम परमेश्वर में कितने महान हैं, बल्कि यह है कि हमें चुपचाप और विनम्रतापूर्वक, फिर भी जितना प्रभावित रूप से हो सके, अपनी रौशनी को चमकने देना है, और उनके गुणों को दर्शाना है जिन्होंने हमें अंधकार से निकालकर अपनी अद्भुत ज्योति में लाया है, और चमत्कार या अद्भुत कार्य करने वाला बनने की जगह सच्चाई के दास और सेवकों का उचित रूप धरना है। Z.'04-9 R3298:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (28 सितम्बर)

1 पतरस 5:8,9 सचेत हो, और जागते रहो, क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जने वाले सिंह की तरह इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए। विश्वास में दृढ़ हो कर उसका सामना करो।

शैतान हमारा विरोध करता है इसका विचार, और यह विचार की हमारा यह मल्लयुद्ध, लोहू और मांस से नहीं, परन्तु प्रधानों से और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से, और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं, हमारे लिये डरावना होता, यदि हमने दूसरी ओर यह महसूस नहीं किया होता कि, सकारात्मकता निर्णय लेने के कारण हमने दूसरी अदृश्य शक्तियों से बहुत बड़ी सहायता और

सहयोग पाया है। जिस क्षण से हम लालसाओं के प्रति सकारात्मक प्रतिरोध करते हैं और प्रभु और उनके कारण के लिए सकारात्मकता से खड़े हो जाते हैं, हम प्रभु और उनकी शक्ति के प्रभाव में बलवन्त हो जाते हैं, और जो हमारी ओर हैं, वे उन सब से बड़े हैं जो कि हमारे विरोध में है। Z.'04-11 R3300:4 यह देखा गया है कि गलत कार्य के प्रति कोई भी हिचकिचाहट लालसा की शक्ति को बढ़ाती है। Z.'03-32 R2568:5 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (29 सितम्बर)

नीतिवचन 16:5 सब मन के घमण्डियों से यहोवा घृणा करता है करता है।

नई सृष्टि की अग्निमय परीक्षाओं में से एक घमण्ड के नेतृत्व में संसार की आत्मा के प्रति प्रेम पर जय पाना है। सांसारिक घमण्ड परमेश्वर में विश्वास और उनके प्रति आज्ञाकारिता को चुनौती देता है, और केवल वे जिनमें अच्छा साहस है और प्रभु में पुरे भरोसे से भरे हैं, वे ही इस घमण्ड रूपी विशालकाय दानव पर जय पा सकते हैं। यह भी आवश्यक है कि जीत को सम्पूर्ण बनाया जाए - उस घमण्ड को पूरी तरह से अपमानित किया जाए, मार दिया जाए, ताकि वह हमें नष्ट करने के लिए फिर कभी न उठे। यह एक व्यक्तिगत लड़ाई है, और इस घमण्ड रूपी विशालकाय

दानव के विरुद्ध एकमात्र उचित हथियार है, नदी से एक पत्थर, प्रभु का संदेश, जो हमें दिखा रहा है कि उनकी दृष्टि में क्या सुखद और स्वीकार्य है, और हमें यह आश्वासन देता है कि जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा; और जो कोई अपने आप को छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा। Z.'03-329 R3231:1 आमीन

सुबह का स्वर्गीय मन्ना (30 सितम्बर)

2 कुरिन्थियों 5:14 क्योंकि मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है।

स्वयं प्रेम का वर्णन करना असंभव प्रतीत होता है; सबसे अच्छा हम यह कर सकते हैं कि इसके आचरण का वर्णन किया जाए। जिन लोगों के पास ऐसी विशेषताओं के साथ प्रेम है, वे इसकी सराहना करने में सक्षम हैं, लेकिन अन्यथा इसे समझाने में सक्षम नहीं हैं - प्रेम परमेश्वर का है, हृदय में, जीभ में, हाथों में, विचारों में ईश्वरीय समानता का होना प्रेम है - यानि प्रेम के द्वारा सभी मानवीय गुणों की निगरानी करना और उन्हें नियंत्रित करने के लिए पूरी तरह से प्रयास करना ... मसीह के चेले या शिष्य के रूप में, हम मसीह की पाठशाला में हैं, और वह महान पाठ जिसे वे दिन-प्रतिदिन हमें सिखा रहे हैं, और वह पाठ जो हमें अच्छी तरह से सीखना चाहिए, वह प्रेम का पाठ है, जिसे सिखने की आवश्यकता है, यदि

हम अपने ऊपरी बुलावे के इनाम को पाने के लिये निशाने तक, इसके सभी विभिन्न विशेषताओं और प्रभाव में, जाना चाहते हैं। प्रेम हमारे दैनिक जीवन के सभी शब्दों और विचारों और कार्यों पर अपनी पकड़ बना लेता है और इनसे संबंधित है। जैसा कि कवि ने कहा है, "जैसा कि हर प्यारा रंग प्रकाश है, - उसी प्रकार हर अनुग्रह प्रेम है।" Z.'03- 55,58 R3150:2; R3151:5 आमीन